MVS FOUNDATION

FREE NOTES

SOCIAL SCIENCE (213)

CHAPTERWISE NOTES

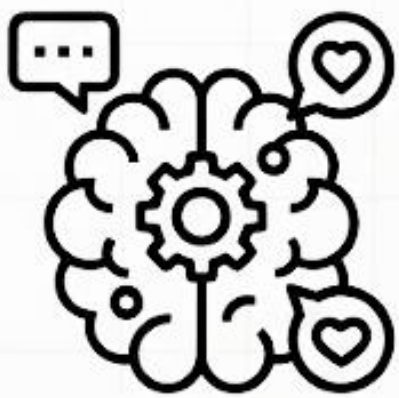

Social Science

Sl. No.	Module	Chapters (Public Examination)	Marks
1	Module 1: India and World through Ages	**L-6:** Religious and Social Awakening in Colonial India **L-8:** Indian National Movement	12
2	Module 2: India: Natural Environment, Resources and Development	**L-9:** Physiography of India **L-10:** Climate **L-13:** Transport and Communication	27
3	Module 3: Democracy at Work	**L-16:** Fundamental Rights and Fundamental Duties **L-19:** Governance at the State Level **L-20:** Governance at the Union Level **L-21:** Political Parties and Pressure Groups	28

Component	Details	Marks
Public Exam (Selected Modules 1,2,3)	Total Chapters : 9	67
Practical Exam	NA	0
TMA	Tutor Marked Assignment	20
Final Possible Marks		**87 Marks**

विषय- सूची

1	औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति
2	भारत का राष्ट्रीय आंदोलन
3	भारत का भौतिक भूगोल
4	जलवायु
5	यातायात तथा संचार के साधन
6	मौलिक अधिकार तथा मौलिक कर्त्तव्य
7	राज्य स्तर पर शासन
8	केंद्रीय स्तर पर शासन
9	राजनीतिक दल तथा दबाव-समूह

1

औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति

परिचय

19वीं सदी का भारतीय समाज अनेक सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों और असमानताओं से प्रभावित था। शिक्षा की कमी और महिलाओं की खराब स्थिति के कारण समाज की प्रगति रुक गई थी। इस अध्याय में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों, प्रमुख सुधारकों और उनके प्रभावों को समझाया गया है।

19वीं सदी के प्रारंभ का समाज

19वीं सदी में भारतीय समाज आज की तुलना में बहुत अलग था और कई कुरीतियाँ प्रचलित थीं।

समाज की समस्याएँ

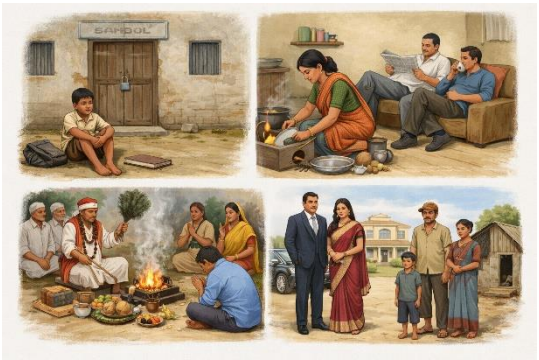

- शिक्षा का अभाव
- महिलाओं की अधीन स्थिति
- अंधविश्वास
- सामाजिक असमानता

शिक्षा का अभाव

शिक्षा कुछ वर्गों तक सीमित थी और अधिकांश लोग अशिक्षित थे।

- शिक्षा उच्च जाति पुरुषों तक सीमित
- धार्मिक ग्रंथों पर नियंत्रण
- वैज्ञानिक शिक्षा का अभाव

महिलाओं की स्थिति

महिलाओं का जीवन कठिन था और कई कुरीतियाँ प्रचलित थीं।

प्रमुख कुरीतियाँ

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- बाल विवाह
- सती प्रथा
- बहुविवाह
- कन्या भ्रूण हत्या
- शिक्षा का अभाव
- संपत्ति अधिकार नहीं

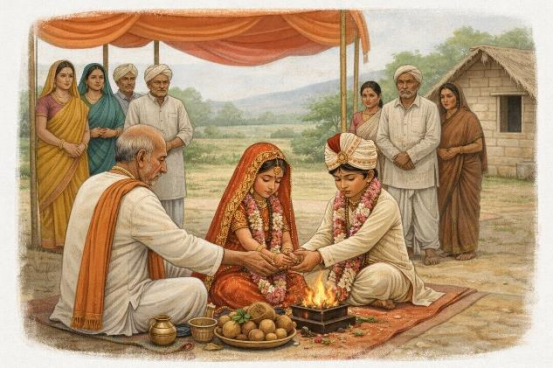

महिलाओं की सामाजिक स्थिति निम्न थी।

परिवर्तन की इच्छा: सामाजिक-धार्मिक जागृति

सुधारकों ने समाज में परिवर्तन लाने के लिए आंदोलन शुरू किए।

कारण

- यूरोप से संपर्क
- आधुनिक शिक्षा
- मिशनरियों की आलोचना
- सामाजिक असमानता

जाति व्यवस्था

जाति व्यवस्था प्रारंभ में पेशे पर आधारित थी, बाद में जन्म आधारित हो गई।

प्रभाव

- सामाजिक असमानता
- निम्न जातियों का शोषण
- सामाजिक प्रगति में बाधा

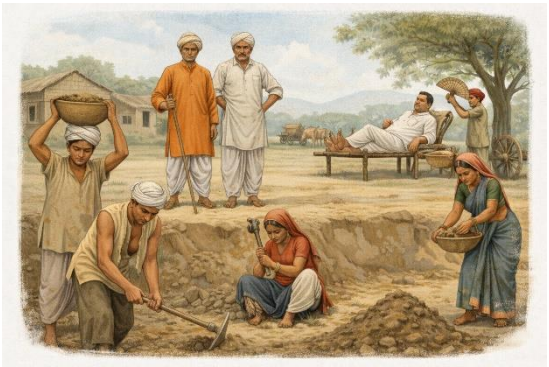

सुधारकों ने इसका विरोध किया।

प्रचलित धार्मिक प्रथाएँ

कई सामाजिक कुरीतियाँ धर्म के नाम पर चल रही थीं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- अंधविश्वास
- कर्मकांड
- पुरोहितों का नियंत्रण

सुधारकों ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया।

शैक्षिक परिदृश्य

आधुनिक शिक्षा का अभाव सामाजिक पिछड़ेपन का कारण था।

- लड़कियों की शिक्षा नहीं
- पारंपरिक शिक्षा
- विज्ञान का अभाव

सुधारकों ने आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा दिया।

19वीं सदी में सामाजिक-धार्मिक सुधार

कई सुधारकों ने समाज सुधार आंदोलन चलाए।

राजा राममोहन राय

सामाजिक सुधार आंदोलन के अग्रदूत।

- ब्रह्म समाज स्थापना (1828)
- सती प्रथा समाप्त कराने में भूमिका (1829 कानून)
- बाल विवाह विरोध
- आधुनिक शिक्षा समर्थन

ईश्वरचंद्र विद्यासागर

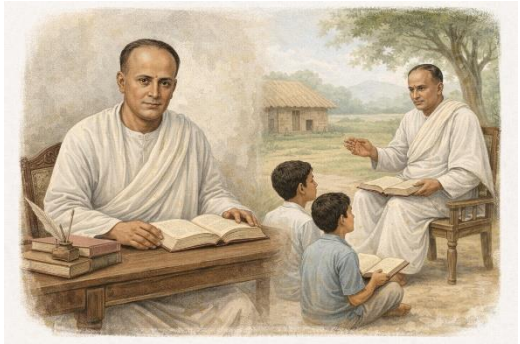

विधवा पुनर्विवाह आंदोलन के प्रमुख नेता।

- विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856)
- बाल विवाह विरोध
- महिला शिक्षा समर्थन

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

स्वामी दयानंद सरस्वती

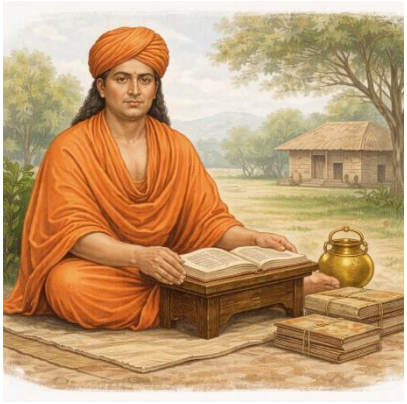

आर्य समाज स्थापना (1875)।

- वेदों पर जोर
- जाति प्रथा विरोध
- महिला सुधार
- शिक्षा का प्रसार

रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानंद

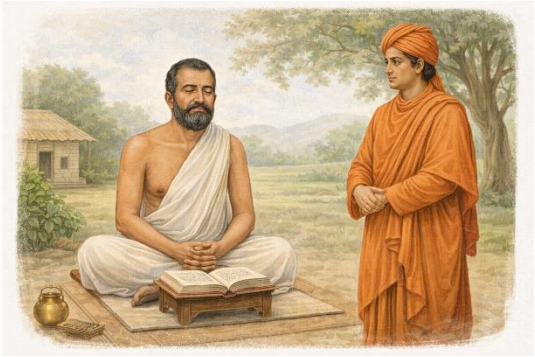

धार्मिक एकता और आध्यात्मिकता पर जोर।

- रामकृष्ण मिशन स्थापना
- जाति प्रथा विरोध
- महिला सम्मान और शिक्षा

सर सैयद अहमद खान

मुस्लिम समाज सुधार के नेता।

- आधुनिक शिक्षा समर्थन
- अलीगढ़ आंदोलन
- महिलाओं की स्थिति सुधार

ज्योतिराव फुले

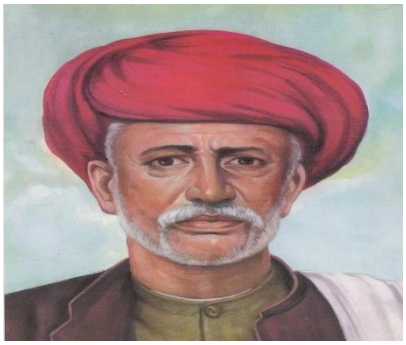

निम्न जातियों और महिलाओं के अधिकार के लिए कार्य।

- सत्यशोधक समाज (1873)
- लड़कियों का पहला स्कूल

न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे

सामाजिक सुधार और महिला शिक्षा।

- बाल विवाह विरोध

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- विधवा विवाह समर्थन
- सामाजिक सुधार संस्थाएँ

पंडिता रमाबाई

महिला अधिकार आंदोलन।

- आर्य महिला समाज (1881)
- विधवाओं के लिए कार्य

एनी बेसेंट

थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़ी।

- शिक्षा प्रसार
- भारतीय संस्कृति का प्रचार
- राजनीतिक जागृति

मुस्लिम सुधार आंदोलन

मुस्लिम समाज में शिक्षा और सामाजिक सुधार।

- अलीगढ़ आंदोलन
- आधुनिक शिक्षा

अकाली सुधार आंदोलन

गुरुद्वारों के सुधार के लिए आंदोलन।

पारसी सुधार आंदोलन

शिक्षा और धार्मिक सुधार पर जोर।

भारतीय समाज पर सुधार आंदोलनों का प्रभाव

सुधार आंदोलनों से समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए।

प्रभाव

- सामाजिक कुरीतियों में कमी

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- महिला स्थिति सुधार
- शिक्षा का प्रसार
- जाति प्रथा पर प्रभाव
- राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरणा

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर- 19वीं सदी में समाज में सती प्रथा, बाल विवाह, जाति भेद और अंधविश्वास जैसी कुरीतियाँ प्रचलित थीं। शिक्षा की कमी और महिलाओं की खराब स्थिति ने समाज की प्रगति रोक दी थी। इसलिए सुधारकों ने सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की शुरुआत की।

प्रश्न-2. राजा राममोहन राय का योगदान लिखिए।

उत्तर- राजा राममोहन राय सामाजिक सुधार आंदोलन के अग्रदूत थे। उन्होंने 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की और सती प्रथा समाप्त कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया तथा आधुनिक शिक्षा और महिलाओं के अधिकारों का समर्थन किया।

प्रश्न-3. ईश्वरचंद्र विद्यासागर के कार्य लिखिए।

उत्तर- ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया और 1856 के विधवा पुनर्विवाह अधिनियम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया और महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया, जिससे समाज में महिलाओं की स्थिति सुधारने में मदद मिली।

प्रश्न-4. ज्योतिराव फुले का योगदान क्या था?

उत्तर- ज्योतिराव फुले ने निम्न जातियों और महिलाओं के अधिकारों के लिए कार्य किया। उन्होंने 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की और लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा दिया। उनका उद्देश्य सामाजिक समानता स्थापित करना और जाति आधारित भेदभाव समाप्त करना था।

प्रश्न-5. सुधार आंदोलनों का भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- सुधार आंदोलनों से सती प्रथा, बाल विवाह और जाति भेद जैसी कुरीतियों में कमी आई। महिला शिक्षा और अधिकारों को बढ़ावा मिला। समाज में समानता, आधुनिक शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हुआ तथा राष्ट्रीय आंदोलन को भी प्रेरणा मिली।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2

भारत का राष्ट्रीय आंदोलन

परिचय

भारत का राष्ट्रीय आंदोलन स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किया गया लंबा संघर्ष था जिसमें विभिन्न नेताओं, संगठनों और जन आंदोलनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस अध्याय में राष्ट्रवाद के उदय, कांग्रेस की स्थापना, गांधी युग, प्रमुख आंदोलनों और स्वतंत्रता तक की घटनाओं को समझाया गया है।

राष्ट्रवाद का उद्भव

राष्ट्रवाद अपने देश के प्रति प्रेम, एकता और पहचान की भावना है।

भारत में राष्ट्रवाद के कारण

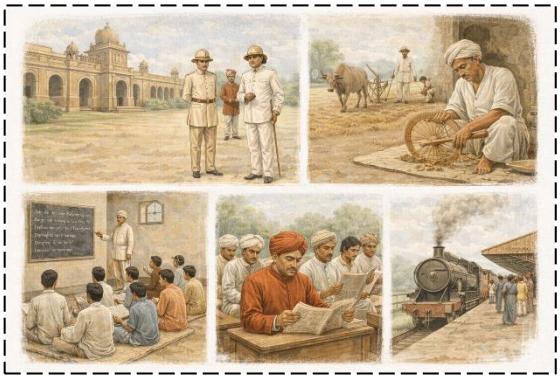

- औपनिवेशिक शोषण
- सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन
- आधुनिक शिक्षा
- प्रेस का विकास
- आर्थिक शोषण

1857 के बाद राष्ट्रवाद की भावना मजबूत हुई।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का आविर्भाव (1885)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भारत का प्रमुख राजनीतिक संगठन बना।

स्थापना

- स्थापना: 1885
- संस्थापक: ए.ओ. ह्यूम

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- प्रथम अध्यक्ष: डब्ल्यू.सी. बनर्जी

प्रारंभिक उद्देश्य

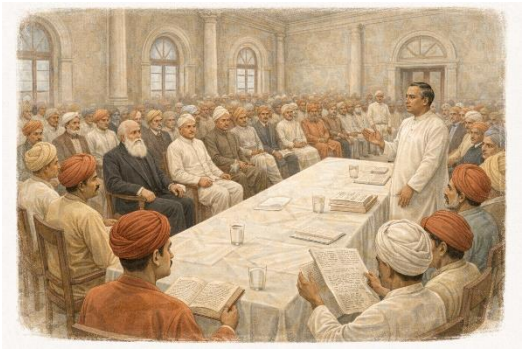

- शिकायतें सरकार तक पहुँचाना
- प्रशासनिक सुधार
- भारतीय प्रतिनिधित्व

प्रारंभिक नेता → उदारवादी

कांग्रेस का आरंभिक चरण

उदारवादी नेताओं ने शांतिपूर्ण तरीकों से सुधार की मांग की।

मांगें:

- प्रतिनिधित्व
- सेवाओं का भारतीयकरण
- करों में कमी
- नागरिक अधिकार

उपलब्धि: राष्ट्रीय चेतना का विकास

बंगाल विभाजन (1905)

लॉर्ड कर्जन ने बंगाल विभाजन किया।

कारण

- प्रशासनिक सुधार का बहाना
- **फूट डालो और शासन करो** नीति

परिणाम

- स्वदेशी आंदोलन

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- बहिष्कार आंदोलन
- राष्ट्रीय भावना मजबूत

विभाजन रद्द: 1911

प्रमुख नेता

- लाला लाजपत राय
- बाल गंगाधर तिलक
- बिपिन चंद्र पाल (लाल-बाल-पाल)

विशेषताएँ

- जन आंदोलन
- बहिष्कार
- स्वदेशी
- स्वतंत्रता जन्मसिद्ध अधिकार

मुस्लिम लीग का गठन (1906)

मुस्लिम हितों की रक्षा के लिए गठन।

- स्थापना: 1906, ढाका
- उद्देश्य: मुस्लिम हितों की रक्षा
- अलग निर्वाचन → साम्प्रदायिकता

मॉर्ले-मिंटो सुधार (1909)

विधायिका का विस्तार किया गया।

विशेषताएँ

- सदस्य संख्या बढ़ी

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- अलग निर्वाचन
- सीमित शक्तियाँ

फूट डालो और शासन करो मजबूत

प्रथम विश्व युद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन

ब्रिटिश ने भारतीय सहयोग माँगा।

प्रभाव

- कर वृद्धि
- भर्ती
- महंगाई
- असंतोष

गांधी युग की शुरुआत

गांधी का उदय

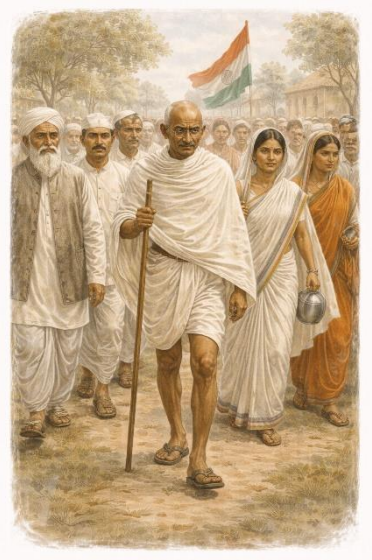

सत्याग्रह और अहिंसा के आधार पर आंदोलन।

प्रारंभिक आंदोलन

- चंपारण (1917)
- खेड़ा
- अहमदाबाद

गांधी जन नेता बने।

असहयोग आंदोलन (1920-22)

ब्रिटिश सरकार से सहयोग समाप्त करने का आह्वान।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

कार्यक्रम

- उपाधि त्याग
- विदेशी वस्त्र बहिष्कार
- शिक्षा बहिष्कार
- स्वदेशी

समाप्त: चौरी-चौरा (1922)

दांडी मार्च (1930)

नमक कानून विरोध।

- तिथि: 6 अप्रैल 1930
- साबरमती → दांडी
- नमक कानून तोड़ा

सविनय अवज्ञा आंदोलन

क्रांतिकारी आंदोलन

कुछ युवाओं ने हिंसात्मक मार्ग अपनाया।

प्रमुख क्रांतिकारी

- भगत सिंह
- राजगुरु
- सुखदेव
- चंद्रशेखर आजाद

काकोरी कांड (1925)

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

समाजवादी विचारों का विकास

मजदूर और किसान आंदोलन।

- भूमि सुधार मांग
- ट्रेड यूनियन
- समाजवादी नेता

नेहरू समाजवादी विचारों से प्रभावित।

स्वतंत्रता की प्राप्ति (1935-47)

अंतिम चरण का आंदोलन।

प्रमुख घटनाएँ

- भारत सरकार अधिनियम 1935
- द्वितीय विश्व युद्ध
- क्रिप्स मिशन (1942)
- आज़ाद हिंद फौज
- भारत छोड़ो आंदोलन (1942)

नारा: करो या मरो

विभाजन और स्वतंत्रता

भारत-पाक विभाजन।

- कैबिनेट मिशन
- प्रत्यक्ष कार्य दिवस
- माउंटबेटन योजना
- **स्वतंत्रता:** 15 अगस्त 1947

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण लिखिए।

उत्तर- भारत में राष्ट्रवाद का उदय ब्रिटिश आर्थिक शोषण, आधुनिक शिक्षा, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों और प्रेस के विकास के कारण हुआ। इन कारकों ने लोगों में राष्ट्रीय चेतना विकसित की और उन्हें एकजुट होकर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया।

प्रश्न-2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना क्यों हुई?

उत्तर- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में भारतीयों की शिकायतों को सरकार तक पहुँचाने, राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने और प्रशासनिक सुधारों की मांग करने के लिए हुई। इसने भारतीयों को एक मंच प्रदान किया और राष्ट्रीय आंदोलन को संगठित दिशा दी।

प्रश्न-3. बंगाल विभाजन के परिणाम लिखिए।

उत्तर- बंगाल विभाजन से स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन शुरू हुए। लोगों ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया। इससे राष्ट्रीय भावना मजबूत हुई और राष्ट्रीय आंदोलन को जन समर्थन मिला।

प्रश्न-4. गांधीजी के आंदोलनों का महत्व लिखिए।

उत्तर- गांधीजी ने सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन बनाया। उन्होंने किसानों, मजदूरों और महिलाओं को आंदोलन से जोड़ा। उनके नेतृत्व ने स्वतंत्रता संघर्ष को नई दिशा दी और आंदोलन व्यापक बना।

प्रश्न-5. भारत छोड़ो आंदोलन का महत्व क्या था?

उत्तर- भारत छोड़ो आंदोलन 1942 में शुरू हुआ और स्वतंत्रता का अंतिम जन आंदोलन बना। गांधीजी के 'करो या मरो' नारे ने लोगों को प्रेरित किया। इस आंदोलन ने ब्रिटिश शासन की नींव कमजोर कर दी और स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3

भारत का भौतिक भूगोल

परिचय

भारत केवल एक देश नहीं बल्कि विविध स्थलरूपों, जलवायु, नदियों और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध एक विशाल भौगोलिक इकाई है। इसकी भौगोलिक स्थिति, पर्वत, मैदान, पठार, मरुस्थल, तटीय क्षेत्र और द्वीप भारत की प्राकृतिक पहचान बनाते हैं। इस अध्याय में भारत की स्थिति, भौतिक विभाजन और जल प्रवाह प्रणाली को समझा जाता है, जो प्राकृतिक संसाधनों, कृषि, जलवायु और मानव जीवन को प्रभावित करते हैं।

स्थान - अर्थ एवं परिभाषा

- स्थान किसी देश की पृथ्वी पर स्थिति को दर्शाता है।
- इसे निरपेक्ष स्थिति (अक्षांश-देशांतर) और सापेक्ष स्थिति (पड़ोसी देशों के संदर्भ में) से समझा जाता है।

भारत की निरपेक्ष स्थिति

- **अक्षांश:** 8°4′ उत्तर से 37°6′ उत्तर
- **देशांतर:** 68°7′ पूर्व से 97°25′ पूर्व
- कर्क रेखा (23°30′ उत्तर) भारत के मध्य से गुजरती है।
- भारत उत्तरी और पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।

भारत की सापेक्ष स्थिति

- **उत्तर-पश्चिम:** पाकिस्तान, अफगानिस्तान
- **उत्तर:** चीन, नेपाल, भूटान
- **पूर्व:** बांग्लादेश, म्यांमार
- **दक्षिण:** श्रीलंका, मालदीव

82°30′ पूर्व देशांतर → भारत का मानक समय

स्थानिक महत्व

- भारत दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा देश है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- एशिया, यूरोप और अफ्रीका के बीच व्यापारिक मार्गों पर स्थित है।
- प्राचीन काल से सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केंद्र रहा है।
- दर्रे (नाथू-ला, शिपकी-ला) संपर्क के महत्वपूर्ण मार्ग हैं।

भारत के राज्य और संघीय राज्य

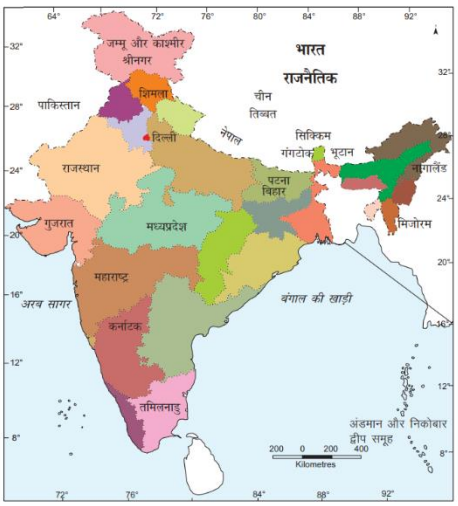

- भारत विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है।
- **कुल क्षेत्रफल:** 32.8 लाख वर्ग किमी
- **स्थल सीमा:** लगभग 15,200 किमी
- **तटरेखा:** लगभग 6100 किमी
- भारत को राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित किया गया है।

राजधानी: नई दिल्ली

भारत का भौतिक विभाजन - अर्थ

भारत में विभिन्न स्थलाकृतियों के कारण भौगोलिक विविधता पाई जाती है, इसलिए देश को छह प्रमुख भौतिक भागों में बाँटा गया है।

भारत के 6 भौतिक भाग

1. उत्तरी पर्वत
2. उत्तरी मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठार
4. भारतीय मरुस्थल
5. तटीय मैदान
6. द्वीप समूह

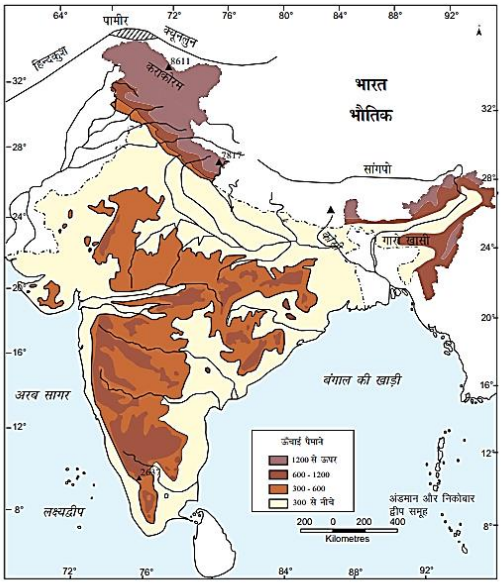

चित्र 9.4: भौतिक विभाग

उत्तरी पर्वत (हिमालय)

- विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला
- प्राकृतिक अवरोध का कार्य करती है

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- नदियों का उद्गम स्थल

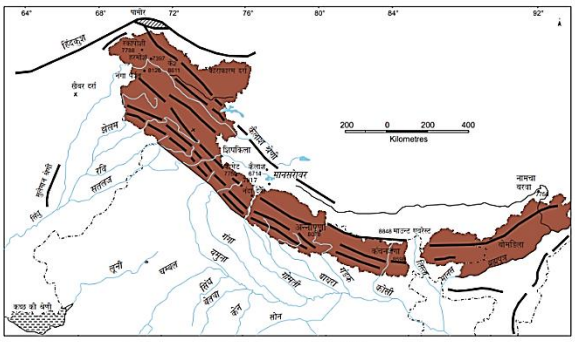

चित्र 9.5 हिमालय की समानान्तर श्रेणियाँ

हिमालय की श्रेणियाँ

- **महान हिमालय (हिमाद्रि)** — सबसे ऊँची
- **मध्य हिमालय (हिमाचल)** — घाटियाँ, हिल स्टेशन
- **शिवालिक** — सबसे कम ऊँचाई

उत्तरी मैदान

- सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र द्वारा निर्मित
- अत्यंत उपजाऊ क्षेत्र
- कृषि का प्रमुख क्षेत्र

विभाजन

- पश्चिमी मैदान
- गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदान

महत्वपूर्ण शब्द

दोआब — दो नदियों के बीच भूमि

खादर — नई जलोढ़ मिट्टी

बांगर — पुरानी जलोढ़ मिट्टी

प्रायद्वीपीय पठार

- भारत का सबसे प्राचीन भू-भाग
- खनिज संसाधनों से समृद्ध

विभाजन

- मध्य उच्च भूमि
- दक्कन पठार

काली मिट्टी कपास के लिए उपयुक्त

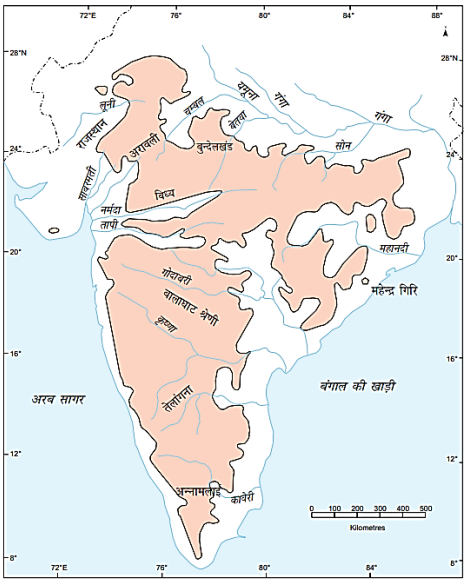

चित्र 9.6 : भारत के प्रायद्वीपीय पठार

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

पश्चिमी घाट vs पूर्वी घाट

आधार	पश्चिमी घाट	पूर्वी घाट
निरंतरता	लगातार	टूटे हुए
ऊँचाई	अधिक	कम
नदियाँ	छोटी	बड़ी नदियाँ डेल्टा बनाती हैं

भारतीय मरुस्थल

- थार मरुस्थल
- अरावली के पश्चिम में
- कम वर्षा
- प्रमुख नदी: लूनी

तटीय मैदान

- समुद्र के किनारे स्थित मैदान
- व्यापार और मत्स्य पालन के लिए महत्वपूर्ण

पश्चिमी तट

- संकीर्ण
- कोंकण, कर्नाटक, मालाबार

पूर्वी तट

- चौड़ा
- डेल्टा क्षेत्र

चिल्का झील → सबसे बड़ी खारे पानी की झील

द्वीप समूह

भारत में दो प्रमुख द्वीप समूह हैं:

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- अंडमान-निकोबार (बंगाल की खाड़ी)
- लक्षद्वीप (अरब सागर)

अंडमान में सक्रिय ज्वालामुखी पाया जाता है।

जल प्रवाह प्रणाली - अर्थ

नदियों और उनकी सहायक नदियों का नेटवर्क जल प्रवाह प्रणाली कहलाता है।

महत्वपूर्ण परिभाषाएँ

- **सहायक नदी** — बड़ी नदी में मिलने वाली नदी
- **डेल्टा** — नदी के मुहाने पर त्रिकोणीय भूमि
- **एस्चुअरी** — नदी और समुद्र का मिश्रण क्षेत्र

मुख्य जल प्रवाह प्रणाली

हिमालयी नदी प्रणाली

- बारहमासी
- हिमनद + वर्षा से जल
- **उदाहरण:** सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र

प्रायद्वीपीय नदी प्रणाली

- वर्षा पर निर्भर
- पूर्व की ओर बहाव अधिक
- उदाहरण: महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी
- नर्मदा और तापी पश्चिम की ओर

चित्र 9.8 : भारत की प्रमुख नदियां

नदियों को साफ रखें — महत्व

- पृथ्वी पर मीठा जल बहुत कम है।
- नदियाँ जीवन रेखा हैं।
- प्रदूषण से जल संकट बढ़ रहा है।
- जल संरक्षण आवश्यक है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. भारत की निरपेक्ष स्थिति क्या है?

उत्तर- भारत की निरपेक्ष स्थिति अक्षांश और देशांतर के आधार पर निर्धारित होती है। भारत 8°4′ उत्तर से 37°6′ उत्तर अक्षांश तथा 68°7′ पूर्व से 97°25′ पूर्व देशांतर के बीच स्थित है। कर्क रेखा भारत के मध्य से गुजरती है और भारत उत्तरी तथा पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।

प्रश्न-2. भारत के भौतिक विभाजन कौन-कौन से हैं?

उत्तर- भारत को स्थलाकृति के आधार पर छह भौतिक भागों में बाँटा गया है -

1. उत्तरी पर्वत
2. उत्तरी मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठार
4. भारतीय मरुस्थल
5. तटीय मैदान
6. द्वीप समूह

ये विभाजन भारत की भौगोलिक विविधता को दर्शाते हैं।

प्रश्न-3. हिमालय की प्रमुख श्रेणियाँ लिखिए।

उत्तर- हिमालय को तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जाता है -

- **महान हिमालय (हिमाद्रि)** - सबसे ऊँची और हिमाच्छादित
- **मध्य हिमालय (हिमाचल)** - घाटियाँ और हिल स्टेशन
- **शिवालिक** - सबसे बाहरी और कम ऊँचाई वाली श्रृंखला

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न-4. हिमालयी और प्रायद्वीपीय नदी प्रणाली में अंतर लिखिए।

उत्तर-

आधार	हिमालयी नदियाँ	प्रायद्वीपीय नदियाँ
जल स्रोत	हिमनद + वर्षा	वर्षा पर निर्भर
प्रवाह	बारहमासी	मौसमी
घाटियाँ	गहरी घाटियाँ बनाती हैं	अपेक्षाकृत कम कटाव
उदाहरण	गंगा, सिंधु	गोदावरी, कृष्णा

प्रश्न-5. तटीय मैदान का महत्व लिखिए।

उत्तर- तटीय मैदान व्यापार, मत्स्य पालन और कृषि के लिए महत्वपूर्ण हैं। यहाँ बंदरगाह स्थित होते हैं जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार होता है। पूर्वी तट पर डेल्टा क्षेत्र उपजाऊ होते हैं और तटीय क्षेत्र पर्यटन के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4
जलवायु

परिचय

भारत की जलवायु उसकी भौगोलिक स्थिति, स्थलरूप, समुद्र, हवाओं और मानसून प्रणाली से निर्धारित होती है। भारत में मौसम का चक्र केवल तापमान और वर्षा को ही प्रभावित नहीं करता बल्कि कृषि, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और दैनिक जीवन को भी प्रभावित करता है। इस अध्याय में भारत की जलवायु के कारक, मानसून की प्रक्रिया, मौसम का चक्र, वर्षा का वितरण और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समझाया गया है।

भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

प्रमुख कारक

- **स्थान:** कर्क रेखा भारत को उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय भागों में विभाजित करती है।
- **समुद्र से दूरी:** समुद्र के पास जलवायु सम होती है, दूर क्षेत्रों में चरम जलवायु।
- **ऊँचाई:** ऊँचाई बढ़ने पर तापमान घटता है (जैसे शिमला ठंडा, मैदान गर्म)।
- **पर्वत श्रेणियाँ:** हिमालय ठंडी हवाओं को रोकता है और मानसून वर्षा में मदद करता है।
- **पवन प्रणाली:** स्थल और समुद्री हवाएँ तथा मानसून जलवायु को प्रभावित करते हैं।
- **जेट स्ट्रीम (ऊपरी वायु धाराएँ):** मानसून की दिशा और वर्षा को प्रभावित करती हैं।

मानसून का तंत्र

मानसून का अर्थ

- शब्द "मानसून" अरबी शब्द "मौसम" से बना है।
- हवाओं की दिशा में मौसमी परिवर्तन को मानसून कहते हैं।

मानसून बनने के कारण

- गर्मियों में स्थल भाग गर्म → निम्न दबाव
- समुद्र अपेक्षाकृत ठंडा → उच्च दबाव
- हवाएँ समुद्र से स्थल की ओर चलती हैं → वर्षा

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

जून–सितंबर में भारत की **80–90% वर्षा** होती है।

मानसून की विशेषताएँ

- मानसून अनियमित होता है (जल्दी या देर से आ सकता है)।
- वर्षा समान रूप से वितरित नहीं होती।
- मानसून के फटने पर लगातार भारी वर्षा होती है।
- सबसे पहले केरल तट पर मानसून पहुँचता है।

मौसम का चक्र

भारत के चार मौसम

1. **शीत ऋतु (दिसंबर–फरवरी)**
2. **ग्रीष्म ऋतु (मार्च–मई)**
3. **दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु (जून–सितंबर)**
4. **वापस लौटता मानसून (अक्टूबर–नवंबर)**

(क) शीत ऋतु

- तापमान उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता है।
- उत्तर भारत में ठंड अधिक।
- पश्चिमी विक्षोभ से हल्की वर्षा।
- तमिलनाडु में इस समय वर्षा होती है।

रबी फसल के लिए महत्वपूर्ण।

(ख) ग्रीष्म ऋतु

- तापमान बहुत अधिक।
- निम्न दबाव क्षेत्र बनता है।
- लू चलती है (गरम शुष्क हवाएँ)।
- आंधी-तूफान और कालबैसाखी।
- आम्र वर्षा (आम पकने में मदद)।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(ग) दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु

- जून में केरल से प्रवेश।
- दो शाखाएँ — अरब सागर और बंगाल की खाड़ी।
- भारत की अधिकांश वर्षा इसी समय।
- बाढ़ और सूखा दोनों संभव।

(घ) वापस लौटता मानसून

- अक्टूबर–नवंबर
- तापमान धीरे-धीरे घटता है।
- बंगाल की खाड़ी में चक्रवात।
- तमिलनाडु में वर्षा।

वर्षा का वितरण

भारत में वर्षा असमान रूप से वितरित होती है।

वर्षा क्षेत्र

वर्षा	क्षेत्र
200 सेमी से अधिक	पश्चिमी तट, उत्तर-पूर्व
100–200 सेमी	पूर्वी भारत
60–100 सेमी	मध्य भारत
60 सेमी से कम	राजस्थान, लद्दाख

विश्व के सबसे अधिक और सबसे कम वर्षा वाले स्थान भारत में हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव

मौसम जीवन, कृषि और त्योहारों को प्रभावित करता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- भारत कृषि प्रधान देश है → मौसम पर निर्भर।
- खरीफ फसल → मानसून
- रबी फसल → शीत ऋतु
- त्योहार मौसम से जुड़े (लोहड़ी, पोंगल, बैसाखी, दिवाली)।

वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन और प्रभाव

जलवायु परिवर्तन भारत की जलवायु को प्रभावित कर रहा है।

कारण

- औद्योगीकरण
- प्रदूषण
- ग्रीनहाउस गैसें (CO_2, CFC)

प्रभाव

- तापमान वृद्धि
- कृषि पर प्रभाव
- मौसम की अनिश्चितता
- बाढ़ और सूखा

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. जलवायु और मौसम में अंतर लिखिए।

उत्तर- मौसम किसी स्थान की अल्पकालिक वायुमंडलीय स्थिति को दर्शाता है, जैसे तापमान, वर्षा और हवा का दैनिक परिवर्तन। जलवायु किसी क्षेत्र के लंबे समय (लगभग 30 वर्ष) के मौसम का औसत होती है। जलवायु स्थायी होती है जबकि मौसम लगातार बदलता रहता है।

प्रश्न-2. भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक लिखिए।

उत्तर- भारत की जलवायु को **स्थान, समुद्र से दूरी, ऊँचाई, पर्वत श्रेणियाँ, पवन प्रणाली और जेट स्ट्रीम** प्रभावित करते हैं। हिमालय ठंडी हवाओं को रोकता है, जबकि समुद्र जलवायु को संतुलित करता है। इन सभी कारकों के कारण भारत में जलवायु विविधता पाई जाती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न-3. मानसून क्या है? इसके बनने का कारण बताइए।

उत्तर- मानसून वह होता है जब साल के अलग-अलग समय में हवाओं की दिशा बदलती है। गर्मियों में जमीन जल्दी गर्म होकर कम दबाव बनाती है और समुद्र ठंडा रहता है। इसलिए हवाएँ समुद्र से जमीन की ओर चलती हैं और भारत में बारिश लाती हैं।

प्रश्न-4. भारत के चार मौसमों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर- भारत में चार मुख्य मौसम होते हैं - **शीत ऋतु (दिसंबर–फरवरी), ग्रीष्म ऋतु (मार्च–मई), दक्षिण-पश्चिम मानसून (जून–सितंबर) और वापस लौटता मानसून (अक्टूबर–नवंबर)।** ये मौसम तापमान, वर्षा और हवाओं में परिवर्तन लाते हैं तथा कृषि और जीवन को प्रभावित करते हैं।

प्रश्न-5. भारत में वर्षा का वितरण असमान क्यों है?

उत्तर- भारत में वर्षा का वितरण स्थलरूप, पर्वत, समुद्र से दूरी और हवाओं की दिशा पर निर्भर करता है। पश्चिमी घाट और उत्तर-पूर्व में अधिक वर्षा होती है जबकि राजस्थान और आंतरिक क्षेत्रों में कम वर्षा होती है। इसी कारण वर्षा असमान पाई जाती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5

यातायात तथा संचार के साधन

परिचय

यातायात और संचार आधुनिक जीवन की जीवनरेखा हैं। ये लोगों, वस्तुओं और सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाकर देश के सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देते हैं। इस अध्याय में विभिन्न परिवहन और संचार साधनों तथा उनके महत्व को समझाया गया है।

परिवहन एवं संचार - देश की जीवन रेखा

परिवहन वस्तुओं और लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाता है, जबकि संचार सूचना का आदान-प्रदान करता है।

परिवहन एवं संचार की भूमिका

- उत्पादन से उपभोग तक वस्तुओं का परिवहन
- व्यापार और आर्थिक विकास में सहायता
- शिक्षा, रोजगार और यात्रा को संभव बनाता है
- लोगों के जीवन स्तर में सुधार

यातायात के साधन

देश के विकास के लिए मुख्य परिवहन साधनों पर निर्भरता होती है।

मुख्य प्रकार

- स्थल परिवहन
- जल परिवहन
- वायु परिवहन

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

स्थल परिवहन

भूमि पर होने वाला परिवहन — मुख्यतः सड़क और रेल।

1. सड़क मार्ग

सबसे सामान्य और लचीला परिवहन साधन।

सड़क मार्ग का महत्व

- घर-घर सेवा
- निर्माण लागत कम
- कम दूरी के लिए सस्ता
- ग्रामीण-शहरी क्षेत्रों को जोड़ता है
- नाशवान वस्तुओं के लिए उपयोगी

सड़कों का वर्गीकरण

(क) निर्माण सामग्री के आधार पर

प्रकार	विवरण
कच्ची सड़क	मिट्टी आदि से बनी
पक्की सड़क	सीमेंट, कंक्रीट, तारकोल

(ख) प्रशासन के आधार पर

- ग्रामीण सड़कें
- जिला सड़कें
- राज्य सड़कें
- राष्ट्रीय राजमार्ग

प्रमुख सड़क परियोजनाएँ

- स्वर्णिम चतुर्भुज (दिल्ली-मुंबई-चेन्नई-कोलकाता)

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- उत्तर-दक्षिण गलियारा
- पूर्व-पश्चिम गलियारा

2. रेल परिवहन

सस्ता और भारी माल परिवहन का प्रमुख साधन। C

महत्व

1. बड़ी संख्या में यात्रियों का परिवहन

2. भारी वस्तुओं का परिवहन

3. उद्योग और व्यापार में सहायक

4. आर्थिक विकास में योगदान

भारत में रेल

- शुरुआत: 1853 (मुंबई-ठाणे)
- एशिया का बड़ा रेल नेटवर्क

रेल विकास को प्रभावित करने वाले कारक

- स्थलाकृति
- उद्योग और खनिज
- जनसंख्या घनत्व
- आर्थिक विकास

जल परिवहन

सबसे सस्ता परिवहन साधन, भारी माल के लिए उपयुक्त।

प्रकार

1. अंतर्देशीय जलमार्ग

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. समुद्री जलमार्ग

महत्व

- कम लागत
- भारी माल परिवहन
- ईंधन की बचत
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सहायता

वायु परिवहन

सबसे तेज परिवहन साधन।

महत्व

- दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँच
- आपदा सहायता
- उच्च मूल्य वस्तुओं के लिए उपयोगी
- राष्ट्रीय रक्षा में महत्वपूर्ण

कमी: महँगा परिवहन

संचार और इसके महत्व

संचार विचार, सूचना और संदेश भेजने की प्रक्रिया है।

महत्व

- लोगों को जोड़ता है
- सूचना प्रदान करता है
- सामाजिक और आर्थिक विकास में सहायता

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

संचार के प्रकार

1. निजी संचार साधन

- डाक सेवा
- टेलीफोन

2. जन संचार साधन

- रेडियो
- टेलीविजन
- समाचार पत्र
- इंटरनेट

नवीन संचार तकनीक

आधुनिक तकनीक ने संचार को तेज बनाया।

- इंटरनेट
- वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग
- ई-कॉमर्स
- ई-मेल
- टेलीमेडिसिन

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. परिवहन को देश की जीवन रेखा क्यों कहा जाता है?

उत्तर- परिवहन लोगों और वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाता है। यह व्यापार, उद्योग, शिक्षा और रोजगार को संभव बनाता है। इसके बिना आर्थिक विकास संभव नहीं होता, इसलिए परिवहन को देश की जीवन रेखा कहा जाता है।

प्रश्न-2. सड़क परिवहन के दो लाभ लिखिए।

उत्तर- सड़क परिवहन घर-घर सेवा प्रदान करता है और कम दूरी के लिए सस्ता होता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों को शहरों से जोड़ता है तथा नाशवान वस्तुओं को जल्दी पहुँचाने में सहायक होता है। इसलिए यह सबसे अधिक उपयोग होने वाला परिवहन साधन है।

प्रश्न-3. भारत में रेल परिवहन का महत्व लिखिए।

उत्तर- रेल परिवहन बड़ी संख्या में यात्रियों और भारी माल को कम लागत में दूर तक पहुँचाता है। यह उद्योग, व्यापार और राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए रेल देश के आर्थिक विकास का प्रमुख साधन है।

प्रश्न-4. जल परिवहन को सबसे सस्ता क्यों माना जाता है?

उत्तर- जल परिवहन में निर्माण और रखरखाव लागत कम होती है तथा एक साथ भारी मात्रा में माल ले जाया जा सकता है। ईंधन की बचत भी होती है। इसलिए भारी माल और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए यह सबसे सस्ता परिवहन साधन माना जाता है।

प्रश्न-5. जन संचार साधन क्या होते हैं? उदाहरण दीजिए।

उत्तर- वे संचार साधन जिनसे एक साथ बड़ी संख्या में लोगों तक सूचना पहुँचाई जाती है, जन संचार साधन कहलाते हैं। उदाहरण - रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र और इंटरनेट। ये शिक्षा, सूचना और मनोरंजन प्रदान करते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

6

मौलिक अधिकार तथा मौलिक कर्त्तव्य

परिचय

लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। अधिकार व्यक्ति के विकास और स्वतंत्रता की गारंटी देते हैं, जबकि कर्तव्य समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी सिखाते हैं। इस अध्याय में मौलिक अधिकारों, उनके प्रकार, महत्व और मौलिक कर्तव्यों को समझाया गया है।

अधिकार तथा कर्तव्यों का अर्थ तथा महत्व

अधिकार वे सुविधाएँ हैं जो व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक होती हैं और जिन्हें समाज व राज्य मान्यता देते हैं। कर्तव्य वे कार्य हैं जिन्हें व्यक्ति को दूसरों और समाज के प्रति करना चाहिए।

महत्व

- व्यक्ति के विकास में सहायता
- सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना
- अधिकार और कर्तव्य एक-दूसरे के पूरक
- लोकतंत्र को मजबूत बनाते हैं

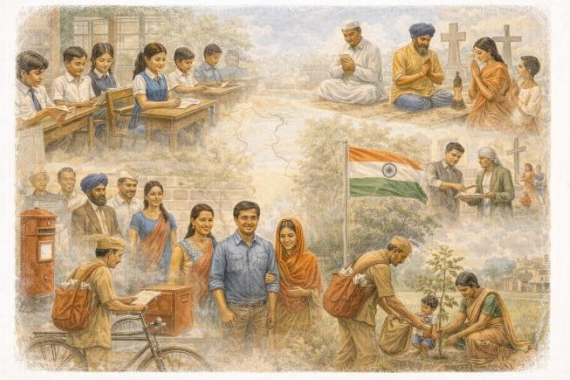

मौलिक अधिकार

संविधान द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण अधिकार जिन्हें न्यायालय द्वारा सुरक्षित किया जा सकता है।

भारत के 6 मौलिक अधिकार

1. समानता का अधिकार
2. स्वतंत्रता का अधिकार
3. शोषण के विरुद्ध अधिकार

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार
5. सांस्कृतिक एवं शैक्षिक अधिकार
6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार

1978 (44वाँ संशोधन) → संपत्ति का अधिकार मौलिक अधिकार से हटाया गया।

समानता का अधिकार

कानून के सामने सभी नागरिक समान हैं।

प्रमुख प्रावधान

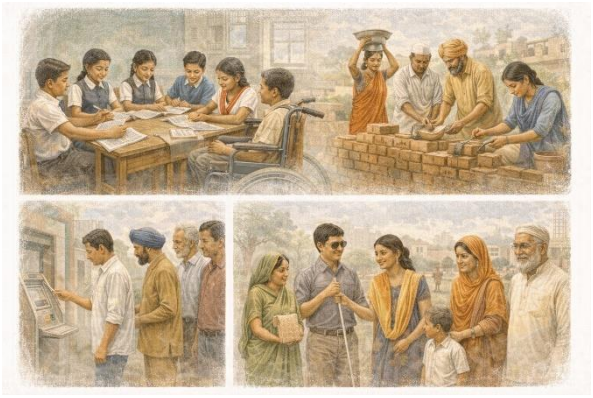

- कानून के समक्ष समानता
- धर्म, जाति, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव निषिद्ध
- सार्वजनिक रोजगार में समान अवसर
- अस्पृश्यता का उन्मूलन
- उपाधियों का अंत

स्वतंत्रता का अधिकार

नागरिकों को विभिन्न प्रकार की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

6 स्वतंत्रताएँ

- विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
- शांतिपूर्ण सभा की स्वतंत्रता
- संगठन बनाने की स्वतंत्रता
- देश में घूमने की स्वतंत्रता
- कहीं भी रहने की स्वतंत्रता
- व्यवसाय करने की स्वतंत्रता

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

उचित **प्रतिबंध** लगाए जा सकते हैं।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

मानव तस्करी, बंधुआ मजदूरी और बाल श्रम पर रोक।

प्रावधान

- मानव तस्करी निषिद्ध
- बेगार निषिद्ध
- 14 वर्ष से कम बच्चों को खतरनाक उद्योग में कार्य निषिद्ध

धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार

किसी भी धर्म को मानने, पालन करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता।

विशेषताएँ

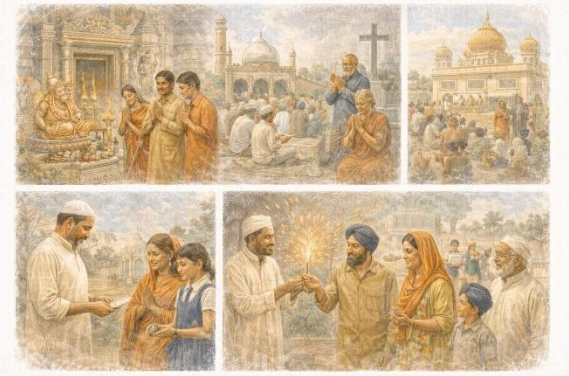

- भारत धर्मनिरपेक्ष राज्य
- धर्म बदलने की स्वतंत्रता
- धार्मिक संस्थाएँ स्थापित करने का अधिकार
- राज्य किसी धर्म को बढ़ावा नहीं देता

सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार

अल्पसंख्यकों की भाषा, संस्कृति और शिक्षा की रक्षा।

प्रावधान

- संस्कृति और भाषा की रक्षा
- अपनी शैक्षणिक संस्थाएँ स्थापित करने का अधिकार
- प्रवेश में भेदभाव नहीं

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

संवैधानिक उपचारों का अधिकार

अधिकारों के उल्लंघन पर न्यायालय जाने का अधिकार।

महत्व

- अधिकारों की सुरक्षा
- सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट रिट जारी करते हैं
- इसे "**अधिकारों का रक्षक**" कहा जाता है

शिक्षा का अधिकार

- **86वाँ संशोधन (2002)** → 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा।
- **कानून लागू:** 2009

मानव अधिकार के रूप में मौलिक अधिकार

मौलिक अधिकार मानव अधिकारों का हिस्सा हैं।

विशेषताएँ

- सार्वभौमिक
- मूलभूत
- मानव गरिमा से जुड़े

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग: 1993

मौलिक कर्तव्य

नागरिकों की राष्ट्र और समाज के प्रति जिम्मेदारियाँ।

प्रमुख कर्तव्य

- संविधान का सम्मान
- राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- देश की एकता बनाए रखना
- पर्यावरण संरक्षण
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना
- सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. मौलिक अधिकार क्या हैं?

उत्तर- मौलिक अधिकार वे अधिकार हैं जो संविधान द्वारा नागरिकों को दिए गए हैं और जिनकी रक्षा न्यायालय करता है। ये व्यक्ति के विकास, स्वतंत्रता और गरिमा के लिए आवश्यक होते हैं। यदि इनका उल्लंघन होता है तो नागरिक न्यायालय में जाकर न्याय प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न-2. समानता के अधिकार का महत्व लिखिए।

उत्तर- समानता का अधिकार सुनिश्चित करता है कि सभी नागरिक कानून के सामने समान हैं। यह धर्म, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव को रोकता है। इससे सामाजिक न्याय, समान अवसर और लोकतंत्र की मजबूती सुनिश्चित होती है।

प्रश्न-3. स्वतंत्रता के अधिकार की छह स्वतंत्रताएँ लिखिए।

उत्तर- स्वतंत्रता के अधिकार के अंतर्गत नागरिकों को विचार एवं अभिव्यक्ति, शांतिपूर्ण सभा, संगठन बनाने, देश में घूमने, कहीं भी रहने तथा व्यवसाय करने की स्वतंत्रता दी गई है। ये स्वतंत्रताएँ व्यक्ति के विकास और लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए आवश्यक हैं।

प्रश्न-4. शोषण के विरुद्ध अधिकार का उद्देश्य क्या है?

उत्तर- शोषण के विरुद्ध अधिकार का उद्देश्य मानव तस्करी, बंधुआ मजदूरी और बाल श्रम को रोकना है। यह कमजोर वर्गों और बच्चों की सुरक्षा करता है तथा उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर देता है। इससे सामाजिक न्याय को बढ़ावा मिलता है।

प्रश्न-5. मौलिक कर्तव्य क्यों आवश्यक हैं?

उत्तर- मौलिक कर्तव्य नागरिकों को राष्ट्र, समाज और संविधान के प्रति जिम्मेदारी का एहसास कराते हैं। ये राष्ट्रीय एकता, अनुशासन और सामाजिक सद्भाव बनाए रखने में मदद करते हैं। अधिकारों के सही उपयोग और लोकतंत्र की सफलता के लिए कर्तव्यों का पालन आवश्यक है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

7

राज्य स्तर पर शासन

परिचय

भारत एक संघीय देश है जहाँ शासन दो स्तरों पर चलता है - केंद्र और राज्य। राज्य स्तर पर शासन नागरिकों के दैनिक जीवन, योजनाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासन को सीधे प्रभावित करता है। इस अध्याय में राज्यपाल, मुख्यमंत्री, राज्य विधायिका और उच्च न्यायालय की भूमिका समझाई गई है।

राज्यपाल

राज्य का संवैधानिक प्रमुख राज्यपाल होता है।

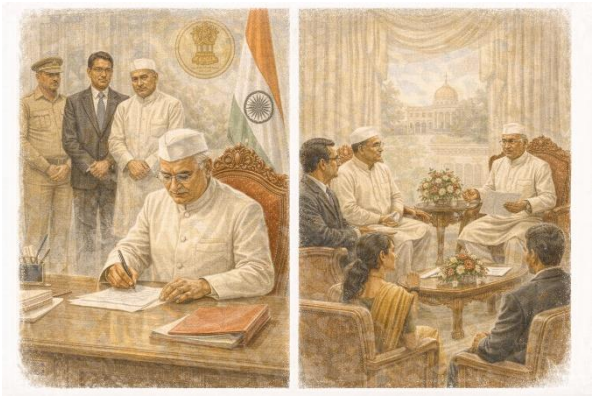

नियुक्ति

राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति करते हैं।

योग्यताएँ

- भारत का नागरिक
- न्यूनतम आयु 35 वर्ष
- किसी लाभ के पद पर न हो

कार्यकाल

- सामान्यतः 5 वर्ष
- राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत पद पर रहते हैं

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

राज्यपाल की शक्तियाँ

राज्यपाल को विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ दी गई हैं।

शक्तियों के प्रकार	मुख्य कार्य
कार्यकारी	मुख्यमंत्री व मंत्रियों की नियुक्ति
विधायी	विधानसभा बुलाना, भंग करना
वित्तीय	बजट प्रस्तुत कराना
न्यायिक	दंड माफी / दंड कम करना
विवेकाधीन	विशेष परिस्थितियों में निर्णय

राज्यपाल और मंत्रिपरिषद के बीच संबंध

राज्यपाल औपचारिक प्रमुख होता है, वास्तविक शक्ति मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद के पास होती है।

- राज्यपाल सलाह पर कार्य करता है
- मुख्यमंत्री निर्णयों की जानकारी देता है
- विशेष स्थिति में विवेकाधीन शक्ति

मुख्यमंत्री तथा मंत्रिपरिषद

नियुक्ति

राज्यपाल मुख्यमंत्री की नियुक्ति करता है और मुख्यमंत्री की सलाह पर मंत्रियों की नियुक्ति होती है।

- कार्यकाल 5 वर्ष (बहुमत पर निर्भर)
- 6 महीने में विधायक बनना आवश्यक

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

मुख्यमंत्री तथा मंत्रिपरिषद के कार्य

राज्य सरकार के वास्तविक कार्य मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद करते हैं।

मुख्यमंत्री के कार्य

- मंत्रिपरिषद का नेतृत्व
- नीतियाँ बनाना
- विभागों का समन्वय
- राज्यपाल और मंत्रिपरिषद के बीच कड़ी

मुख्यमंत्री की स्थिति

मुख्यमंत्री राज्य का वास्तविक कार्यकारी प्रमुख होता है।

- सबसे शक्तिशाली पद
- बहुमत होने पर शक्ति अधिक
- गठबंधन सरकार में सीमित शक्ति

राज्य विधायिका

राज्य में कानून बनाने वाली संस्था राज्य विधायिका होती है।

- एकसदनीय या द्विसदनीय
- राज्यपाल इसका अंग

विधानसभा का गठन

विधानसभा निर्वाचित सदन है।

तथ्य

- सदस्य: 60–500
- कार्यकाल: 5 वर्ष

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- न्यूनतम आयु: 25 वर्ष
- सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार से चुनाव

विधानपरिषद का गठन

विधानपरिषद उच्च सदन है।

विशेषताएँ

- स्थायी सदन
- कार्यकाल: 6 वर्ष
- न्यूनतम आयु: 30 वर्ष
- आंशिक चुनाव + नामांकन

राज्य विधायिका के कार्य

विधायिका के मुख्य कार्य:

- कानून बनाना
- कार्यपालिका पर नियंत्रण
- चुनाव संबंधी कार्य
- संविधान संशोधन में भाग

नागरिकों के दैनिक जीवन पर राज्य सरकार का प्रभाव

राज्य सरकार की योजनाएँ सीधे नागरिकों को प्रभावित करती हैं।

उदाहरण

- शिक्षा योजनाएँ
- मध्याह्न भोजन योजना
- स्वास्थ्य कार्यक्रम

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- स्वच्छता अभियान

राज्य योजनाएँ जीवन स्तर सुधारती हैं।

उच्च न्यायालय तथा अधीनस्थ न्यायालय

प्रत्येक राज्य में उच्च न्यायालय होता है।

उच्च न्यायालय का गठन

न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति करते हैं।

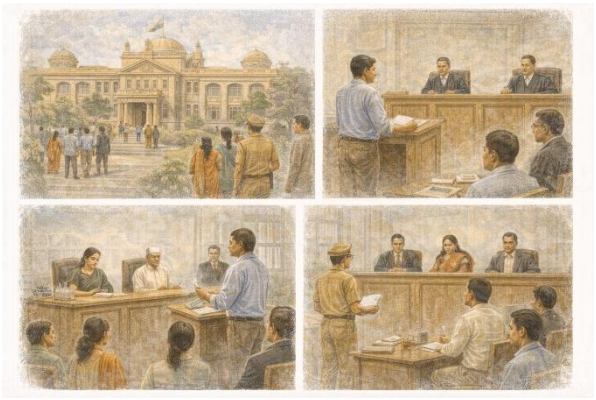

योग्यता

- भारत का नागरिक
- 10 वर्ष न्यायिक पद / वकालत
- सेवानिवृत्ति आयु: 62 वर्ष

उच्च न्यायालय का अधिकार क्षेत्र

दो प्रकार:

- प्रारंभिक अधिकार क्षेत्र
- अपीलीय अधिकार क्षेत्र

विशेष

- रिट जारी कर सकता है
- अधीनस्थ न्यायालयों पर नियंत्रण

अधीनस्थ न्यायालय

जिला और निचले स्तर के न्यायालय।

- जिला न्यायाधीश
- सत्र न्यायालय
- स्थानीय स्तर पर न्याय

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. राज्यपाल की नियुक्ति कैसे होती है?

उत्तर- राज्यपाल की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। राज्यपाल बनने के लिए व्यक्ति भारत का नागरिक होना चाहिए और उसकी न्यूनतम आयु 35 वर्ष होनी चाहिए। राज्यपाल सामान्यतः पाँच वर्ष तक पद पर रहता है और राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत कार्य करता है।

प्रश्न-2. मुख्यमंत्री को वास्तविक कार्यकारी प्रमुख क्यों कहा जाता है?

उत्तर- मुख्यमंत्री राज्य सरकार का वास्तविक कार्यकारी प्रमुख होता है क्योंकि वही नीतियाँ बनाता है, मंत्रिपरिषद का नेतृत्व करता है और प्रशासनिक निर्णय लागू कराता है। राज्यपाल औपचारिक प्रमुख होता है जबकि वास्तविक शक्ति मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद के पास होती है।

प्रश्न-3. राज्य विधायिका के मुख्य कार्य लिखिए।

उत्तर- राज्य विधायिका कानून बनाती है, कार्यपालिका पर नियंत्रण रखती है, चुनाव संबंधी कार्य करती है और संविधान संशोधन प्रक्रिया में भाग लेती है। यह राज्य की नीतियों और प्रशासन को दिशा देने वाली प्रमुख संस्था है।

प्रश्न-4. उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र क्या हैं?

उत्तर- उच्च न्यायालय के दो मुख्य अधिकार क्षेत्र होते हैं - प्रारंभिक और अपीलीय। यह मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए रिट जारी करता है तथा अधीनस्थ न्यायालयों के निर्णयों पर अपील सुनता है और उन पर नियंत्रण रखता है।

प्रश्न-5. राज्य सरकार नागरिकों के दैनिक जीवन को कैसे प्रभावित करती है?

उत्तर- राज्य सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, खाद्य और कल्याण योजनाओं के माध्यम से नागरिकों के दैनिक जीवन को प्रभावित करती है। ये योजनाएँ जीवन स्तर सुधारती हैं और समाज के कमजोर वर्गों को सहायता प्रदान करती हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

8

केंद्रीय स्तर पर शासन

परिचय

भारत एक संघीय लोकतांत्रिक देश है जहाँ शासन केंद्र और राज्यों के बीच विभाजित होता है। केंद्र स्तर पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्रिपरिषद, संसद और न्यायपालिका देश की नीतियाँ बनाते हैं और प्रशासन चलाते हैं। इस अध्याय में केंद्रीय शासन की संरचना, शक्तियाँ और कार्यप्रणाली को सरल रूप में समझाया गया है।

राष्ट्रपति

राष्ट्रपति भारत का संवैधानिक प्रमुख होता है और सरकार के सभी कार्य उसके नाम से किए जाते हैं।

राष्ट्रपति निर्वाचन की प्रक्रिया

राष्ट्रपति का चुनाव निर्वाचन मंडल द्वारा किया जाता है।

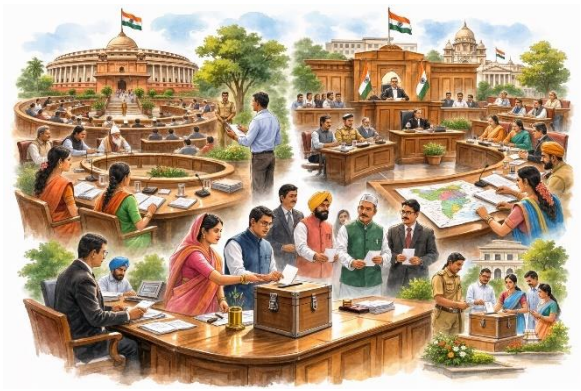

निर्वाचन मंडल में शामिल -

- संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य
- राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य
- दिल्ली और पुडुचेरी विधानसभा सदस्य

मुख्य तथ्य

- गुप्त मतदान
- आनुपातिक प्रतिनिधित्व
- एकल संक्रमणीय मत प्रणाली

योग्यताएँ

- भारत का नागरिक
- न्यूनतम आयु 35 वर्ष
- लोकसभा सदस्य बनने की योग्यता

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- लाभ का पद न हो

कार्यकाल

- 5 वर्ष
- पुनः चुनाव संभव
- पद रिक्त — मृत्यु, इस्तीफा, महाभियोग

राष्ट्रपति की शक्तियाँ

राष्ट्रपति को विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ दी गई हैं।

शक्तियों के प्रकार	मुख्य कार्य
कार्यपालिका संबंधी शक्तियाँ	प्रधानमंत्री व मंत्रियों की नियुक्ति
विधायी शक्तियाँ	संसद बुलाना, भंग करना, अध्यादेश
वित्तीय शक्तियाँ	धन विधेयक अनुमति, बजट
न्यायिक शक्तियाँ	दया, क्षमा, सजा कम करना

राष्ट्रपति और आपातकालीन शक्तियाँ

असामान्य परिस्थितियों में राष्ट्रपति विशेष शक्तियाँ प्रयोग करता है।

आपातकाल के प्रकार

- राष्ट्रीय आपातकाल
- राज्य आपातकाल (राष्ट्रपति शासन)
- वित्तीय आपातकाल

प्रभाव

- केंद्र की शक्तियाँ बढ़ती हैं
- राज्य की शक्तियाँ सीमित हो सकती हैं
- कुछ अधिकार स्थगित हो सकते हैं

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

राष्ट्रपति की स्थिति

राष्ट्रपति औपचारिक प्रमुख होता है, वास्तविक शक्ति मंत्रिपरिषद के पास होती है।

- राष्ट्रपति सलाह पर कार्य करता है
- प्रधानमंत्री वास्तविक कार्यकारी प्रमुख
- राष्ट्रपति राष्ट्र का प्रतीक

प्रधानमंत्री तथा मंत्रिपरिषद

नियुक्ति

राष्ट्रपति प्रधानमंत्री की नियुक्ति करता है और प्रधानमंत्री की सलाह पर मंत्रियों की नियुक्ति होती है।

मुख्य तथ्य

- लोकसभा में बहुमत दल का नेता
- कार्यकाल 5 वर्ष (बहुमत पर निर्भर)
- 6 महीने में सांसद बनना आवश्यक

प्रधानमंत्री तथा मंत्रिपरिषद के कार्य

केंद्र सरकार के वास्तविक कार्य प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद करते हैं।

प्रधानमंत्री के कार्य

- मंत्रिपरिषद का नेतृत्व
- नीतियाँ बनाना
- विभागों का समन्वय
- राष्ट्रपति और मंत्रिपरिषद के बीच कड़ी
- लोकसभा भंग करने की सलाह

प्रधानमंत्री की स्थिति

प्रधानमंत्री केंद्र सरकार का वास्तविक कार्यकारी प्रमुख होता है।

- सबसे शक्तिशाली पद
- बहुमत होने पर शक्ति अधिक

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- गठबंधन सरकार में सीमित शक्ति

संघीय मंत्रिपरिषद

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में मंत्रियों का समूह।

मंत्रियों के प्रकार

- कैबिनेट मंत्री
- राज्य मंत्री
- उप मंत्री

महत्वपूर्ण

- लोकसभा के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व
- अविश्वास प्रस्ताव पास → पूरी मंत्रिपरिषद इस्तीफा

भारतीय संसद

संसद कानून बनाने वाली केंद्रीय संस्था है और राष्ट्रपति इसका अंग होता है।

- लोकसभा
- राज्यसभा

लोकसभा का गठन

लोकसभा संसद का निर्वाचित सदन है।

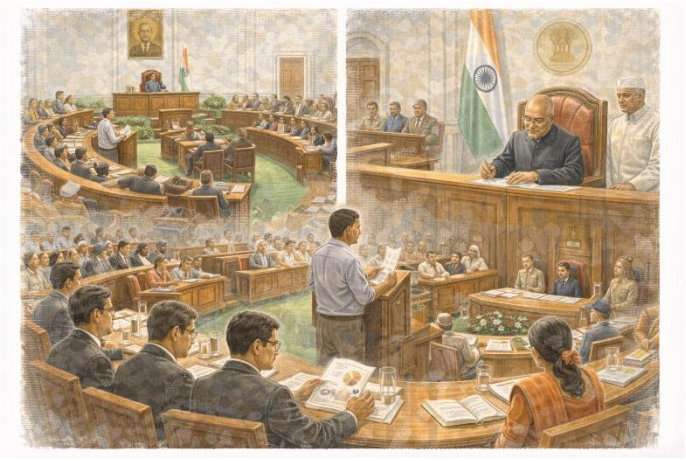

तथ्य

- अधिकतम सदस्य: 552
- कार्यकाल: 5 वर्ष
- न्यूनतम आयु: 25 वर्ष
- प्रत्यक्ष चुनाव

राज्यसभा का गठन

राज्यसभा संसद का उच्च सदन है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

विशेषताएँ

- स्थायी सदन
- कार्यकाल: 6 वर्ष
- न्यूनतम आयु: 30 वर्ष
- अप्रत्यक्ष चुनाव

संसद के कार्य

- कानून बनाना
- कार्यपालिका पर नियंत्रण
- वित्तीय कार्य
- संविधान संशोधन

सर्वोच्च न्यायालय

भारत का सर्वोच्च न्यायालय देश का सर्वोच्च न्यायिक निकाय है।

गठन

न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है।

योग्यता

- भारत का नागरिक
- न्यायिक अनुभव / वरिष्ठ वकील
- सेवानिवृत्ति आयु: 65 वर्ष

अधिकार क्षेत्र

- मूल अधिकार क्षेत्र
- अपीलीय अधिकार क्षेत्र
- परामर्श अधिकार क्षेत्र

विशेष

- संविधान की रक्षा
- न्यायिक पुनरावलोकन
- रिट जारी करना

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. राष्ट्रपति का चुनाव कैसे होता है?

उत्तर- राष्ट्रपति का चुनाव निर्वाचन मंडल द्वारा किया जाता है जिसमें संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य तथा राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य शामिल होते हैं। चुनाव गुप्त मतदान, आनुपातिक प्रतिनिधित्व और एकल संक्रमणीय मत प्रणाली से होता है।

प्रश्न-2 प्रधानमंत्री को वास्तविक कार्यकारी प्रमुख क्यों कहा जाता है?

उत्तर- प्रधानमंत्री केंद्र सरकार का वास्तविक कार्यकारी प्रमुख होता है क्योंकि वही मंत्रिपरिषद का नेतृत्व करता है, नीतियाँ बनाता है, विभागों का समन्वय करता है और प्रशासनिक निर्णय लागू कराता है। राष्ट्रपति औपचारिक प्रमुख होता है जबकि वास्तविक शासन प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद चलाते हैं।

प्रश्न-3. संसद के मुख्य कार्य लिखिए।

उत्तर- संसद का मुख्य कार्य कानून बनाना है। इसके अतिरिक्त यह कार्यपालिका पर नियंत्रण रखती है, बजट और वित्तीय मामलों को स्वीकृति देती है, राष्ट्रीय नीतियों पर चर्चा करती है और संविधान संशोधन प्रक्रिया में भाग लेकर शासन व्यवस्था को दिशा प्रदान करती है।

प्रश्न-4. लोकसभा और राज्यसभा में अंतर लिखिए।

उत्तर- लोकसभा संसद का निचला और निर्वाचित सदन है जिसका कार्यकाल पाँच वर्ष होता है तथा सदस्य सीधे जनता द्वारा चुने जाते हैं। राज्यसभा उच्च और स्थायी सदन है जिसके सदस्य अप्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं और इसका कार्यकाल स्थायी होता है।

प्रश्न-5. सर्वोच्च न्यायालय के कार्य लिखिए।

उत्तर- सर्वोच्च न्यायालय देश का सर्वोच्च न्यायिक निकाय है जो संविधान की रक्षा करता है, अपील सुनता है, न्यायिक पुनरावलोकन करता है और मौलिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए रिट जारी करता है। यह अधीनस्थ न्यायालयों पर नियंत्रण रखता है और अंतिम न्याय प्रदान करता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

9

राजनीतिक दल तथा दबाव-समूह

परिचय

लोकतंत्र में सरकार का गठन, नीतियों का निर्माण और जनता की भागीदारी राजनीतिक दलों के माध्यम से होती है। राजनीतिक दल लोकतांत्रिक व्यवस्था की रीढ़ होते हैं, जबकि दबाव और हित समूह सरकार की नीतियों को प्रभावित करते हैं। इस अध्याय में राजनीतिक दलों की भूमिका, प्रकार और दबाव समूहों के महत्व को सरल रूप में समझाया गया है।

राजनीतिक दल : अर्थ एवं विशेषताएँ

राजनीतिक दल समान विचारधारा वाले लोगों का संगठित समूह होता है जो राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर नीतियाँ लागू करना चाहता है।

राजनीतिक दल का अर्थ

राजनीतिक दल नागरिकों का संगठित समूह है जो समान राजनीतिक विचारों को साझा करता है और सत्ता प्राप्त कर अपनी नीतियाँ लागू करना चाहता है।

परिभाषा

- समान विचारधारा वाले लोगों का समूह
- सत्ता प्राप्त करना मुख्य उद्देश्य
- नीतियों को लागू करना

विशेषताएँ

- राजनीतिक दल संगठित समूह होता है
- समान नीतियाँ और लक्ष्य
- चुनाव के माध्यम से सत्ता प्राप्त करना
- सत्ता में आकर नीतियों को लागू करना

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

राजनीतिक दल : कार्य एवं भूमिका

राजनीतिक दल लोकतांत्रिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

मुख्य कार्य

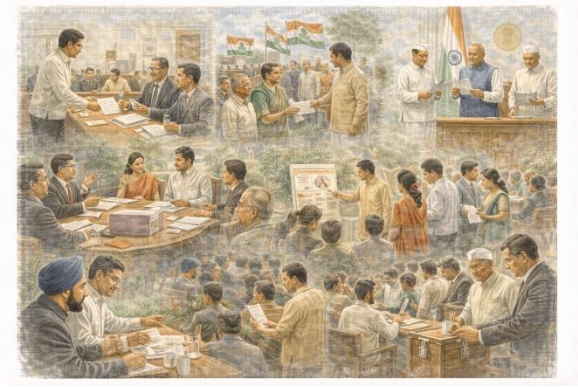

- उम्मीदवारों का नामांकन
- चुनाव प्रचार
- सरकार का गठन
- विपक्ष की भूमिका
- जनता को शिक्षित करना
- जनता और सरकार के बीच कड़ी

भारत में राजनीतिक दल : शुरुआत एवं प्रगति

भारत में राजनीतिक दलों की शुरुआत 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से मानी जाती है।

महत्वपूर्ण तथ्य

1885 — कांग्रेस स्थापना

1967 तक — एक दल प्रभुत्व

1977 — द्विदलीय प्रवृत्ति

1989 के बाद — गठबंधन सरकार

वर्तमान — बहुदलीय प्रणाली

प्रभाव

- लोकतंत्र मजबूत हुआ
- राजनीतिक भागीदारी बढ़ी
- गठबंधन राजनीति का विकास

भारत में दलीय प्रणाली : स्वरूप, प्रकार एवं नीतियाँ

भारत में बहुदलीय प्रणाली है जहाँ अनेक दल सत्ता प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

भारतीय दलीय प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ

- बहुदलीय प्रणाली
- गठबंधन सरकार
- क्षेत्रीय दलों की महत्वपूर्ण भूमिका
- स्थायी सत्ता या विपक्ष नहीं
- मुद्दा आधारित राजनीति

भारतीय राजनीतिक दलों के प्रकार

भारत में राजनीतिक दलों का वर्गीकरण निर्वाचन आयोग करता है।

प्रकार	अर्थ
राष्ट्रीय दल	पूरे देश में प्रभाव
क्षेत्रीय दल	राज्य स्तर पर प्रभाव
पंजीकृत दल	मान्यता न प्राप्त दल

भारतीय राजनीतिक दल एवं उनकी नीतियाँ

प्रत्येक राजनीतिक दल चुनाव के दौरान घोषणा पत्र जारी करता है जिसमें उसकी नीतियाँ होती हैं।

मुख्य दल और नीतियाँ (संक्षेप)

कांग्रेस

- लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता
- उदारीकरण
- कल्याणकारी योजनाएँ

भाजपा

- राष्ट्रीय एकता
- लोकतंत्र

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- मूल्य आधारित राजनीति

कम्युनिस्ट दल

- श्रमिक और किसान हित
- समाजवाद
- निजीकरण का विरोध

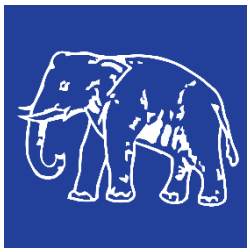

बहुजन समाज पार्टी

- वंचित वर्ग का विकास
- सामाजिक न्याय

राजनीतिक दल एवं दबाव/हित समूह

दबाव और हित समूह सरकार की नीतियों को प्रभावित करते हैं पर स्वयं चुनाव नहीं लड़ते।

दबाव समूह और हित समूह

हित समूह	दबाव समूह
समान हित वाले लोग	सरकार पर दबाव डालते हैं
प्रभाव डाल सकते हैं	नीतियों को बदलने का प्रयास
हमेशा दबाव नहीं	सक्रिय दबाव

दबाव समूह : भूमिका एवं तकनीक

दबाव समूह लोकतंत्र में जनता की आवाज़ उठाते हैं।

तकनीक

1. प्रदर्शन - किसी मुद्दे पर सरकार या प्रशासन का ध्यान आकर्षित करने के लिए सार्वजनिक रूप से विरोध या समर्थन दिखाना।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. याचिका - किसी समस्या के समाधान के लिए सरकार या अधिकारियों को लिखित अनुरोध प्रस्तुत करना।

3. रैली - लोगों का संगठित समूह द्वारा किसी मुद्दे के समर्थन या विरोध में जुलूस निकालना।

4. मीडिया अभियान - टीवी, अखबार और सोशल मीडिया के माध्यम से जनमत बनाने का प्रयास करना।

5. लॉबिंग - सरकारी अधिकारियों या नेताओं को प्रभावित करके नीतियों या निर्णयों को अपने पक्ष में करवाने का प्रयास।

6. हड़ताल - काम बंद करके सरकार या संस्था पर मांगें मनवाने के लिए दबाव बनाना।

राजनीतिक दल और दबाव समूह में अंतर

राजनीतिक दल	दबाव समूह
सत्ता प्राप्त करना	नीतियों को प्रभावित करना
चुनाव लड़ते हैं	चुनाव नहीं लड़ते
विचारधारा आधारित	हित आधारित

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. राजनीतिक दल क्या है?

उत्तर- राजनीतिक दल समान विचारधारा वाले लोगों का संगठित समूह होता है जो चुनाव के माध्यम से राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना चाहता है और अपनी नीतियाँ लागू करता है। यह लोकतंत्र में सरकार के गठन, नीतियों के निर्माण और जनता के प्रतिनिधित्व का महत्वपूर्ण माध्यम होता है।

प्रश्न-2 लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर- लोकतंत्र में राजनीतिक दल चुनाव प्रक्रिया को संगठित करते हैं, उम्मीदवारों का चयन करते हैं, सरकार का गठन करते हैं और जनता तथा सरकार के बीच कड़ी का कार्य करते हैं। वे जनता को राजनीतिक रूप से शिक्षित करते हैं और नीतिगत निर्णयों में भागीदारी सुनिश्चित करते हैं।

प्रश्न-3. भारत में बहुदलीय प्रणाली क्या है?

उत्तर- बहुदलीय प्रणाली वह व्यवस्था है जिसमें अनेक राजनीतिक दल चुनाव में भाग लेते हैं और सत्ता प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। भारत में कोई एक दल स्थायी रूप से सत्ता में नहीं रहता, इसलिए गठबंधन सरकारें बनती हैं और क्षेत्रीय दलों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रश्न-4. दबाव समूह क्या होते हैं?

उत्तर- दबाव समूह ऐसे संगठित समूह होते हैं जो सरकार की नीतियों और निर्णयों को प्रभावित करने के लिए कार्य करते हैं। वे स्वयं चुनाव नहीं लड़ते बल्कि प्रदर्शन, याचिका, लॉबिंग और जनमत के माध्यम से सरकार पर दबाव डालकर अपने हितों की पूर्ति का प्रयास करते हैं।

प्रश्न-5. राजनीतिक दल और दबाव समूह में अंतर लिखिए।

उत्तर- राजनीतिक दल सत्ता प्राप्त करने के लिए चुनाव लड़ते हैं और सरकार बनाते हैं, जबकि दबाव समूह चुनाव नहीं लड़ते बल्कि सरकार की नीतियों को प्रभावित करते हैं। राजनीतिक दल विचारधारा आधारित होते हैं जबकि दबाव समूह विशेष हितों पर आधारित होते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/